विविध गायन शैलियों के अन्तर्गत प्रयुक्त काफी रागांगों का सांस्कृतिक एवं प्रयोगात्मक अध्ययन

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा से

संगीत विषय में पी.एच.डी. की आंशिक पूर्ति हेतु शोध प्रबन्ध की

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

वन्दना वरूण

शोध निर्देशिका

प्रो0 सुधा सहगल
संगीत (गायन)

संगीत विभाग, कला संकाय
दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग, आगरा - 282005

2023

भूमिका -

गायन शैली एक ऐसी गायन सम्बन्धी सांगीतिक संरचना है, जिसमें गायन के आधारभूत विशिष्ट रचनात्मक व सृजनात्मक तत्वों को समाहित कर इसका उत्तरोत्तर विकास किया जाता है। समयचक्र व विभिन्न रचनाधर्मिता के कारण गायन शैलियों में परिवर्तनापरांत परिपक्वता का साधारण व विशिष्ट अर्थों में समाहित होना स्वाभाविक है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में विभिन्न गायन शैलियाँ अपने विशिष्ट तत्वों द्वारा पहचानी जाती है, जैसे ध्रुपद गायन शैली में निहित नोम, तोम आलाप, स्वर लगाव, उपज विशिष्ट लयकारी गाम्भीर्य व कंठ की ओजपूर्ण अभिव्यक्ति ध्रुपद की पहचान है। इसी प्रकार ख्याल गायन शैली में अद्भुत रचना सौष्ठव अभूतपूर्व स्वर विन्यास, गायन कौशल, संरचनात्मक सौन्दर्य, आलाप व तान का विविध चमत्कार पूर्ण प्रयोग जैसे तत्व इस गायन शैली को अत्यन्त विशिष्ट सिद्ध करते हैं। इसी प्रकार ठुमरी गायन शैली की विशिष्टता अपने विविध प्रकारों में भिन्न सिद्ध करते है। इसी प्रकार ठुमरी गायन शैली की विशिष्टता अपने विविध प्रकारों में भिन्न रूपों में विद्यमान है यथा बनारस की ठुमरी में बोलबनाव तथा भाव अंग अधिक है तो दूसरी ओर आगरा घराने की बोलबांट ठुमरी ख्यालनुमा विशिष्टताओं के साथ लयकारी अंग से विशेष है तथा पंजाब अंग की ठुमरी अपनी चंचलता और चपलता के कारण कण, खटके, मुर्कियों के कारण विशेष रूप से पहचानी जाती है। इसी प्रकार दादरा गायन शेली की संरचना मध्य एवं द्रुत लय के अन्तर्गत बराबर के बोलों के साथ सुसज्जित होती है, तराना गायन शैली की भी निरर्थक/सार्थक बोल प्रधान विशिष्ट पहचान है। अभिप्रायः यह है कि सभी गायन शैलियाँ एक दूसरे से संरचना व तत्वों के स्तर पर भिन्न है किंतु विचारणीय यह तथ्य है कि जब किसी राग का प्रयोग इन गायन शैलियों में किया जाता है तो ....

- क्या इन गायन शैलियों में प्रयुक्त होने वाले तत्व राग के स्वरूप व सौन्दर्य को प्रभावित करते हैं।
- क्या गायन शैली रागानुरूप होगी या रागानुसार गायन शैली में परिवर्तन होते हैं?
- क्या रागों का तात्विक पक्ष गायन शैलियों के तात्विक पक्ष के समान है?
- क्या किन्हीं विशेष गायन शैलियों हेतु विशिष्ट राग होते हैं

इन सभी प्रश्नों के समाधान अन्वेषित करना शोधकत्री का प्रमुख ध्येय है।

दूसरी ओर शोध के अन्य महत्वपूर्ण पक्ष राग काफी पर प्रकाश डाला जाए तो स्पष्ट करना होगा कि उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग को एक स्वतन्त्र एकांग की भांति तो देखा ही जाता है साथ ही साथ विभिन्न वर्गीकरणों के परिप्रेक्ष्य में मेल राग, राग रागिनी वर्गीकरण तथा वर्तमान में थाट वर्गीकरण के अस्तित्व को भी नकारा नहीं जा सकता। अस्तु, काफी एक इकाई के रूप में थाट, राग तथा रागांग ऐसी संरचना है जिसके सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक पक्ष विभिन्न सम्भावनाओं को जन्म देते हैं। इनके अतिरिक्त काफी भारतीय संस्कृति में राग/धुन के रूप में निहित है। होली पर्व काफी प्रधान स्वर लहरियां राग/धुन काफी की कहीं जाए तो अनुचित न होगा। अधिकांश होली प्रधान रचनाएं राग काफी के समतुल्य ही दृष्टव्य होती है, भले ही वे मध्य लय अथवा द्रुत लय प्रधान हो। अस्तु, इस राग का शोध की दृष्टि से और अधिक अध्ययन करते समय शोधकत्री ने पाया कि अत्यन्त सशक्त राग काफी में जहाँ एक ओर ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, टप्पा जैसी गायन शैलियों में विभिन्न रचनाएं प्राप्त होती हैं वहीं दूसरी ओर गीत, गजल, भजन जैसी गायन शैलियों में भी प्रचुर रचनाऐं प्राप्त होती हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य और अधिक यह भी प्रबल ज्ञात हुआ कि काफी थाटाधारित अंग जैसे - काफी, कान्हड़ा, मल्हार, सारंग, धनाश्री काफी की ही उपशाखाओं की भांति प्रस्फुटित हुए। इन अंगों में विभिन्न रागों को उत्पन्न करने की भी सशक्त सम्भावना बनी। निम्न आरेख में ये सभी विशेषताएं प्रथमतः काफी को स्पष्ट करती है। तत्पश्चात इससे निःस्रत होने वाले अंगों को भी स्पष्ट करती है -

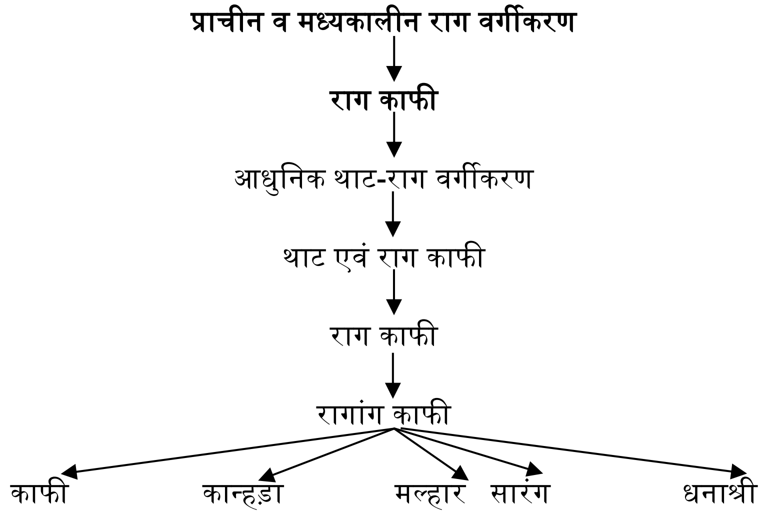

शोधकत्री संगीत गायन की छात्रा है तथा शास्त्रीय संगीत में अत्यधिक रूचि होने के कारण राग काफी तथा इसके अन्तर्गत आने वाले रांगों का प्रयुक्तिकरण विभिन्न गायन शैलियों में किस प्रकार प्रयोग हो रहा है? यह जानने की

अत्यन्त उत्कन्ठा है। अतः थाट एवं राग काफी तथा इसके विभिन्न अंगों के अन्तर्गत आने वाले रागों का अध्ययन करने क लिए व गायन शैलियों के विशिष्ट तत्वों का अध्ययन करने के लिए शोधकत्री द्वारा सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया है जो इस प्रकार है -

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण -

पुस्तकें -

1. राग मल्हार दर्शन, डॉ. गीता बनर्जी, संगीत कार्यालय, हाथरस
2. राग विश्लेषण, डॉ. उमा गर्ग, संजय प्रकाशन, भाग - 1, सन् 2002
3. संगीताजलि गीत संग्रह, डॉ. लोकेश शर्मा, स्वाती शर्मा, नैतिक प्रकाशन, सन् 2019
4. संगीत उपवन, बंदिशों के शतरंगी सुमन, लक्ष्मण चैसालकर, सन्, 25.02.2021, कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5. हिन्दुस्तानी संगीत में होली गान, नीता माथुर, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
6. बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत, सुधा सहगल, डॉ. मुक्ता, सन् 20-12-16
7. हिन्दुस्तानी संगीत में रागांग, डॉ. ज्योति मिश्रा, कनिष्क पब्लिकेशन, सन् 25-02-2021
8. हिन्दुस्तानी संगीत में सारंग, मल्हार और कान्हाड़ा, डॉ. प्रेमलता कनष्कि पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, शर्मा
9. राग एवं रागांग विभिन्न प्रकार, भाग - 2, प्रो. सुधा सहगल, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
10. परम्परागत हिन्दुस्तान सैद्धान्तिक संगीत, भगवन्त कौर, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, सन् 2002
11. संगीत राग परिचय भाग - 1, देवकीनन्दन धवन,संगीत कार्यालय, हाथरस, जनवरी 2011
12. कान्हड़ा का उदभव और विकास, डॉ. सरोज घोष, राधा पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण, 2000
13. राग प्रवीण, गणेश प्रसाद शर्मा, कनिष्क डिस्ट्रब्यूटर्स, नई दिल्ली, पब्लिशर्स, प्रथम संस्करण, 1962
14. ठुमरी की उत्पत्ति, विकास और शैलियाँ, डॉ. शत्रुघ्न शुक्ल, 7 दिसम्बर, 1982, हिन्दी माध्यम कार्यान्वन

निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय संगीत कार्यालय, हाथरस,

15. प्रान्तीय संगीत विविध पक्ष, डॉ. सुधा सहगल, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ल, सन् 20-12-2010

16. भारतीय संस्कृति शाश्वत जीवनदृष्टि एवं संगीत, डॉ. रूचि गुप्ता कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली

17. सफर ठुमरी गायकी का, अंजलि पोहनकर, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2009

18. संगीत और संवाद, अशोक कुमार, कनिष्क पब्लिशर्स कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2009

19.मल्हार के प्रकार (30 प्रकार), जयसुखलाल बि, शाह विनय संगीत कार्यालय हाथरस, प्रकाशक, शाह परिवार बम्बई, द्वितीय संस्करण 1991

20.सारंग के प्रकार, कान्हड़ा के प्रकार, मल्हार के प्रकार, पं. जयसुखलाल त्रिभुवन शाह, शाह पब्लिशर्स, पूना 1990

शोध प्रबन्ध -

1. उत्तर भारतीय शास्त्रीय, उपशास्त्रीय व सुगम संगीत की गायन शैलियों की भावात्मक एवं कलात्मक सौन्दर्यवृद्धि में सहायक वाद्यों के प्रयोग का अध्ययन एवं तुलनात्मक विवेचन सन् - 2006, निर्देशक, डॉ. रवि कुमार भटनागर, शोधकत्री, राधारानी

2. उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के कतिपय प्रातर्गेय एवं सायंगेय रागों का थाट एवमं रागांग के दृष्टिकोण से तुलनात्मक अध्ययन, सन् 2000, निर्देशक डॉ. रवि कुमार भटनागर, शोधकत्री- सोनिका सिन्हा

3. उपशास्त्रीय संगीतात्मक विधाओं के तात्विक परिप्रेक्ष्य में बेगम अख्तर की गायकी का विस्तृत अध्ययन, सन् 2005 निर्देशक सुधा सहगल, शोधकत्री कु0 मुक्ता

4. हिन्दुस्तानी संगीत के दस थाटों के कतिपय रागों की बंदिशों के विविध स्वरूप: विश्लेषणात्मक अध्ययन, सन् 2009

निर्देशिका - सुभद्रा कु0 सत्संगी,शोधकत्री, लवी माहेश्वरी

5. उत्तर भारतीय संगीत में शास्त्रीय गायन की विविध गायन शैलियों का क्रमिक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन, खरे, श्वेता, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, 2020

6. भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन शैलियों का क्रमिक विकास, सीमा श्रीवास्तव, इलाहाबाद विश्वविद्यालय - 2001

लघु शोध प्रबन्ध -

1. औडव - औडव जाति के दस रागों का अध्ययन, राज रितु, दयालबाग, एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा 2000

2. आगरा घराने ंकी बोलबांट ठुमरी - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, शर्मा चंचल, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा - 2010

3. आगरा घराने का सादरा गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन, सत्संगी अर्शा, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यू, आगरा 2015

पत्र-पत्रिकाएं -

1. संगीत कला का प्रतिनिधि मासिक वर्ष 60, अंक 10, अक्टॅबर 1994 संस्थापक, काका हाथरस, प्रकाशक (संगीत कार्यालय)

2. संगीत - जून 1991

3. संगीत मासिक पत्रिका, नवम्बर 2011

4. संगीत कला विहार - नवम्बर 2022 साल 65 अंक 22

5. संगीत कला विहार, सितम्बर, 2011 वर्ष - 64, अंक

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण का सार -

उपरोक्त सम्बन्धित साहित्य का गहन अध्ययन करने के पश्चात शोधकत्री को यह ज्ञात हुआ कि गायन शैलियों से सम्बन्धित साहित्य तो प्राप्त होता है, किंतु एक ही स्थान पर सभी गायन शैलियों का विस्तृत वर्णन प्राप्त नहीं होता है। कतिपय पुस्तकों जैसे - "पं. भातखण्डे कृत क्रमिक पुस्तक मालिका (2-4 भाग) ' डॉ. लक्ष्मी नारायण द्वारा संकलित निबन्ध संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस: डॉ. श्रीखण्डे कृत ख्याल गायकी के विभिन्न घराने: डॉ. सुधा सहगल कृत राग एवं रागांग, राधा पब्लिकेशन्स, दिल्ली में गायन शैलियों के संक्षिप्त परिचय ही दिये गये हैं। पं. जय सुखलाल त्रिभुवन शाह द्वारा लिखित पुस्तकें सारंग के प्रकार, मल्हार के प्रकार, कान्हड़ा के प्रकार तीनों अंगों एवं इनसे निःस्रत प्रकारों पर तो प्रकाश डालती है किन्तु गायन शैली के तात्विक मूल्यों पर इनमें कोई चर्चा प्राप्त नहीं होती। शोध प्रबन्धों में तो गायन शैलियों के प्रयोगात्मक व काफी के सांस्कृतिक पक्ष पर कोई साहित्य उपलब्ध नहीं होता। यदि शोध पक्षों में कहीं उल्लेख प्राप्त होते हैं तो वे केवल सैद्धान्तिक चर्चा पर ही आधारित होते हैं, क्रियात्मक चर्चा पर ही आधारित होते हैं, क्रियात्मक या प्रयोगात्मक पक्षों पर कोई चर्चा नहीं करते। एक अन्य पुस्तक प्रो. स्वतन्त्र बाला शर्मा द्वारा रचित संगीत का मनोवैज्ञानिक पक्ष में ध्रुपद, धमार, तराना, टप्पा, ख्याल, ठुमरी, दादरा कजरी, चैती, होरी, भजन, गीत के विषय अत्यन्त संक्षिप्त विवरण प्राप्त होते है किंतु इनके अन्तर्गत प्रयुक्त होने वाले तत्वों का कोई वर्णन नहीं होता है। कतिपय पुस्तकों में बंदिशों का साहित्य तथा विभिन्न गायन शैलियों में आधारित रचनाएं तो प्राप्त होती है किंतु प्रयोगात्मक पक्ष का सर्वथा अभाव ही है। दूसरे एक ही स्थान पर काफी तथा इसके अन्दर आने वाले रागांगों की चर्चा पूर्णरूपेण नहीं होती है। राग काफी प्राचीन रागों में से एक है। इसके सैद्धान्तिक स्वरूप पर कुछ व्याख्या करती है जैसे भातखण्डे सगीत शास्त्र तथा क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 5 तथा राग विज्ञान (1-6 भाग)। गायन शैलियों के आधार पर तो काफी प्रधान सांस्कृतिक व प्रयोगात्मक पक्ष तो किसी भी साहित्य में प्राप्त नहीं होते।

निम्न आरेख से उदाहरण स्वरूप एक गायन शैली 'ध्रुपद' को आधार मानकर काफी राग, थाट व रागांग का प्रयोगात्मक स्वरूप को विचारणीय किया जा रहा है –

राग काफी
अन्य रागांग

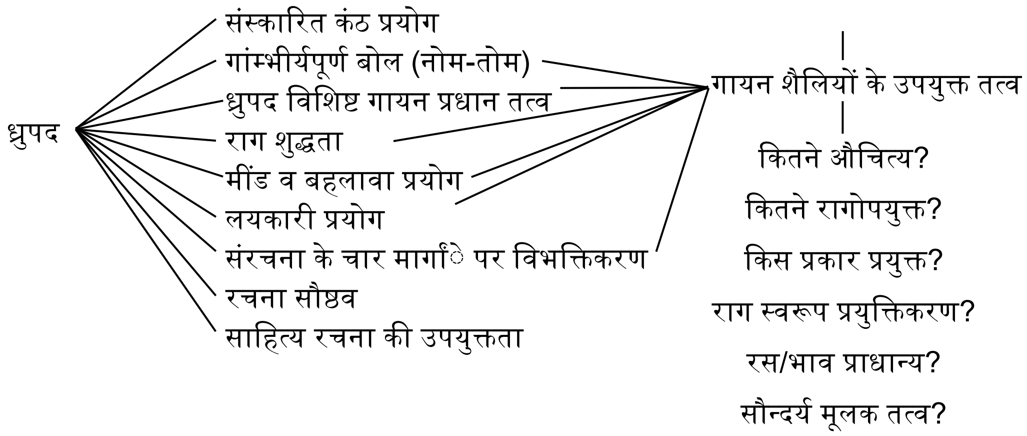

ध्रुपद गायन शैली के विभिन्न तत्वों के सदृश ही अन्य गायन शैलियों को भी उनके तत्वों के अनुरूप अन्वेषित करने का प्रयास किया जाएगा। अतः काफी राग व रागाधारित् थाटाधारित अंगो को सीखने तथा इनके क्रियात्मक स्वरूप को गायन शैलियों के विशिष्ट तत्वों के आधार पर सूक्ष्मता से निरीक्षण करने के लिए निम्न विषय का शोधकत्री द्वारा चयन किया गया है -

विषय कथन -

"विविध गायन शैलियों के अन्तर्गत प्रयुक्त काफी रागांगों का सांस्कृतिक एवं प्रयोगात्मक अध्ययन"

शोध में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या -

- विविध वि. (प्रा.व.) - अनेक प्रकार का, पारिजात शब्दकोश

  - संस्कृत हिन्द शब्दकोश, डॉ. ईश्वर चन्द्र शर्मा

- गायन शैली - स्त्रीलिंग (संगीत गायन) गायन विधा का पूरा ज्ञान गाने की क्रिया या भाव

  - लोक भारतीय प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश - आचार्य रामचन्द्र शर्मा

- प्रयुक्त वि. (प्रा. युज् क्त) - उत्पन्न, फलित, पारिजात शब्दकोश

  - संस्कृत हिन्द शब्दकोश, डॉ. ईश्वर चन्द्र शर्मा

- रागांग - स्वतन्त्र छवि बनाने वाले स्वर समूह

  - भारतीय संगीत शास्त्र, तुलसी राम देवांगन

- सांस्कृतिक वि. (सं.) - संस्कृति से सम्बन्ध रखने वाला, संस्कृति सम्बन्धी

  - प्रमाणिक हिन्दीकोश, आचार्य रामचन्द्र शर्मा

- प्रयोगात्मक वि. - प्रयोग सम्बन्धी

  - हिन्दवी शब्दकोश, सिद्धेश्वर सिंह

- अध्ययन पुं. (सं) - किसी विषय की गहनता से पढ़ाई

  - हिन्दवी शब्दकोश, सिद्धेश्वर सिंह

अध्ययन की आवश्यकता -

- काफी राग एवं रागांगों तथा इनके अन्तर्गत आने वाले रागों का सैद्धान्तिक व क्रियात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता है।
- राग काफी का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य स्पष्ट करना अत्यन्त आवश्यक है।
- राग काफी के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न अंगों का भी सैद्धान्तिक व क्रियात्मक अध्ययन विश्लेषण करने की आवश्यकता है।
- विभिन्न गायन शैलियों के विशिष्ट तत्वों से राग काफी तथा अन्य रागाधारित अंगों में वृद्धि अध्ययन करने की आवश्यकता है।

अध्ययन का महत्व -

- प्रस्तावित शोध का महत्व विभिन्न गायन शैलियों के अन्तर्गत निहित होने वाले विशिष्ट तत्वों में होगा।
- प्रत्येक गायन शैली के विशिष्ट तत्वों के क्रियात्मक प्रयुक्तिकरण को समक्ष लाना महत्वपूर्ण होगा।
- राग काफी तथा इसके अन्तर्गत आने वाले अंगों का भी अध्ययन शास्त्रीय, क्रियात्मक, तुलनात्मक व निरीक्षणात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण हुआ।
- भारतीय संस्कृति प्रधान तत्वों को एक शास्त्रीय संगीत को स्पष्ट करना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अध्ययन के उद्देश्य -

- विभिन्न गायन शैलियों में ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक व क्रियात्मक पक्षों का अध्ययन।

- राग काफी का ऐतिहासिक सांस्कृतिक, सैद्धान्तिक व क्रियात्मक अध्ययन करना।
- राग काफी के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न अंगों का शास्त्रीय, क्रियात्मक, तुलनात्मक व प्रयोगात्मक अध्ययन करना।
- भारतीय लोक संस्कृति में निहित काफी प्रधान सांगीतिक तत्वों को खोजना।
- विभिन्न कलाकारों विद्वानों व प्रबुद्ध वर्ग द्वारा साक्षात्कार जानकारियाँ प्राप्त करना।
- विभिन्न रागों में स्वरचित रचनाएँ प्रकाश में लाना।

कार्यविधि एवं उपकरण

प्रस्तावित शोध हेतु सर्वेक्षणात्मक व व्याख्यात्मक प्रबन्धो का प्रयोग किया जाएगा तथा विभिन्न पुस्तकालयों, संस्थाओं तथा अकादमियों से सामग्री प्राप्त की जाएगी। इस क्षेत्र के कलाकारों, विद्वानों तथा लेखकों द्वारा साक्षात्कार के आधार पर जानकारी प्राप्त हो जाएगी। रेडियो, टी0वी0 व इंटरनेट के माध्यम से भी सूचनायें एकत्रित की जाएगी। विभिन्न रिकॉर्डिंग अथवा ध्वन्यांकित सामग्री का प्रयोग भी किया जाएगा शोध उपकरणों में प्रश्नावली, अनुसूची, निर्धारण मापनी का प्रयोग किया जाएगा तथा अन्य उपकरणों जैसे - टी0बी0, कैमरा, कम्प्यूटर आदि का प्रयोग किया जाएगा।

अध्ययन का परिसीमांकन

कार्य व समय की सीमा को देखते हुए सम्पूर्णतः राग काफी के अन्तर्गत पाँच गायन शैलियों पर अध्ययन किया जाएगा तथा सभी अंगों के अन्तर्गत पाँच-पाँच रागों अर्थात कुल 25 रागों पर ही अध्ययन किया जाएगा।

अध्यायों का विभाजन

सम्बन्धित साहित्य का अध्यन

- **प्रथम अध्याय**

  विभिन्न गायन शैलियाँ - परिचयात्मक अध्ययन

- **द्वितीय अध्याय**

  1. राग काफी - विविध परिप्रेक्ष्य

2. राग काफी में सांस्कृतिक, सैद्धान्तिक तथा क्रियात्मक अध्याय

- **तृतीय अध्याय**

काफी के पाँच रागांग: शास्त्रीय व क्रियात्मक स्वरूप

- **चतुर्थ अध्याय**

1. विभिन्न गायन शैलियों में राग काफी का विश्लेषण

2. विभिन्न गायन शैलियों में काफी के अंग प्रधान रागों व प्रकारों का विश्लेषण

- **पंचम अध्याय**

1. काफी राग, अंग व प्रकारों की विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त रचनाओं का संकलन

2. काफी, राग, अंग व प्रकारों की स्वरचित रचनाओं का संकलन

निष्कर्ष

संदर्भ, ग्रंथ सूची

प्रस्तावित शोध की रूपरेखा निर्मित करने से पूर्व विद्वानों, कलाकारों व प्रबुद्ध वर्ग से पूछी गई प्रश्नावली

- काफी रागांग का इतिहास क्या है?
- काफी रागांग में आने वाले अंगों का परिचय क्या है?
- गायन शैलियों में प्रयक्त होने वाले तत्व राग के स्वरूप व सौन्दर्य को कैसे प्रभावित करते हैं?
- विविध गायन शैलियों पर प्रकाश डालिए?
- गायन शैलियों का लय से सम्बन्धित महत्व क्या है?
- क्या गायन शैलियां विविध लयों में अपने स्वरूप को परिवर्तित करती हैं?
- क्या लय के अनुसार गायन शैलियों में कुछ तत्व समाहित हो जाते है तो कुछ तिरोहित हो जाते हैं?

- गायन शैलियों में एक ही रचना को विविध लयों में क्या प्रयुक्त किया जा सकता है?
- ख्याल गायन शैली का इतिहास क्या है?
- ध्रुपद गायन शैली का इतिहास क्या है?
- धमार का क्रियात्मक स्वरूप क्या है?
- ध्रुपद गायन शैली का विकास क्रम क्या है?
- धमार गायन शैली का इतिहास क्या है?
- धमार गायन शैली का विकास क्रम क्या है?
- ठुमरी गायन शैली का इतिहास क्या है?
- ठुमरी के गायकी प्रधान तत्व क्या है?
- बोलबांट की ठुमरी एवं बोलबाँट की ठुमरी में क्या अन्तर है?
- ठुमरी गायन शैली का विकास क्रम क्या है?
- ठुमरी गायन शैली का साहित्यिक प्रयोग कितना महत्वपूर्ण है?
- क्या तराना गायन शैली को विभिन्न लयों में गाया जा सकता है?

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें

1. राग मल्हार दर्शन, डॉ. गीता बनर्जी, संगीत कार्यालय, हाथरस
2. राग विलेषण, डॉ. उमा गर्ग, संजय प्रकाशन, भाग - 1, सन् 2002
3. संगीताजलि गीत संग्रह, डॉ. लोकेश शर्मा, स्वाती शर्मा, नैतिक प्रकाशन, सन् 2019
4. संगीत उपवन, बंदिशों के शतरंगी सुमन, लक्ष्मण चैसालकर, सन्, 25.02.2021, कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, नई

दिल्ली।

5. हिन्दुस्तानी संगीत में होली गान, नीता माथुर, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

6. बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत, सुधा सहगल, डॉ. मुक्ता, सन् 20-12-16

7. हिन्दुस्तानी संगीत में रागांग, डॉ. ज्योति मिश्रा, कनिष्क पब्लिकेशन, सन् 25-02-2021

8. हिन्दुस्तानी संगीत में सारंग, मल्हार और कान्हड़ा, डॉ. प्रेमलता कनष्कि पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, शर्मा

9. राग एवं रागांग विभिन्न प्रकार, भाग - 2, प्रो. सुधा सहगल, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

10. परम्परागत हिन्दुस्तान सैद्धान्तिक संगीत, भगवन्त कौर, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, सन् 2002

11. संगीत राग परिचय भाग - 1, देवकीनन्दन धवन,संगीत कार्यालय, हाथरस, जनवरी 2011

12. कान्हाड़ा का उदभव और विकास, डॉ. सरोज घोष, राधा पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण, 2000

13. राग प्रवीण, गणेश प्रसाद शर्मा, कनिष्क डिस्ट्रब्यूटर्स, नई दिल्ली, पब्लिशर्स, प्रथम संस्करण, 1962

14. ठुमरी की उत्पत्ति, विकास और शैलियाँ, डॉ. शत्रुघ्न शुक्ल, 7 दिसम्बर, 1982, हिन्दी माध्यम कार्यान्विन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय संगीत कार्यालय, हाथरस,

15. प्रान्तीय संगीत विविध पक्ष, डॉ. सुधा सहगल, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, सन् 20-12-2010

16. भारतीय संस्कृति शाश्वत जीवनदृष्टि एवं सगीत, डॉ. रूचि गुप्ता कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली

17. सफर ठुमरी गायकी का, अंजलि पोहनकर, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2009

18. संगीत और संवाद, अशोक कुमार, कनिष्क पब्लिशर्स कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2009

19. मल्हार के प्रकार (30 प्रकार), जयसुखलाल बि, शाह विनय संगीत कार्यालय हाथरस, प्रकाशक, शाह परिवार

बम्बई, द्वितीय संस्करण 1991

शोध प्रबन्ध

1. उत्तर भारतीय शास्त्रीय, उपशास्त्रीय व सुगम संगीत क गायन शैलियों की भावात्मक एवं कलात्मक सौन्दर्यवृद्धि में सहायक वाद्यों के प्रयोग का अध्ययन एवं तुलनात्मक विवेचन सन् - 2006, निर्देशक, डॉ. रवि कुमार भटनागर, शोधकत्री, राधारानी
2. उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के कतिपय प्रातार्गेय एवं सायंगेय रागों का थाट एवमं रांगांग के दृष्टिकोण से तुलनात्मक अध्ययन, सन् 2000, निर्देशक डॉ. रवि कुमार भटनागर, शोधकत्री - सोनिका सिन्हा
3. उपशास्त्रीय संगीतात्मक विधाओं के तात्विक परिप्रेक्ष्य में बेगम अख्तर की गायकी का विस्तृत अध्ययन, सन् 2005 निर्देशक सुधा सहगल, शोधकत्री कु0 मुक्ता
4. हिन्दुस्तानी संगीत के दस थाटों के कतिपय रागों की बंदिशों के विविध स्वरूप: विश्लेषणात्मक अध्ययन, सन् 2009 निर्देशिका - सुभद्रा कु0 सत्संगी,शोधकत्री, लवी माहेश्वरी
5. उत्तर भारतीय संगीत में शास्त्रीय गायन की विविध गायन शैलियों का क्रमिक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन, खरे, श्वेता, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, 2020
6. भारतीय शास्त्रय संगीत में गायन शैलियों का क्रमिक विकास, सीमा श्रीवास्तव, इलाहाबाद विश्वविद्यालय - 2001

लघु शोध प्रबन्ध

1. औडव - औडव जाति के दस रागों का अध्ययन, राज रितु, दयालबाग, एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा 2000
2. आगरा घराने ंकी बोलबांट ठुमरी - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, शर्मा चंचल, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा - 2010
3. आगरा घराने का सादरा गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन, सत्संगी अर्शा, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट,

आगरा 2015

पत्र-पत्रिकाएं

1. संगीत कला का प्रतिनिधि मासिक वर्ष 60, अंक 10, अक्टॅबर 1994 संस्थापक, काका हाथरस, प्रकाशक (संगीत कार्यालय)
2. संगीत - जून 1991
3. संगीत मासिक पत्रिका, नवम्बर 2011
4. संगीत कला विहार - नवम्बर 2022 साल 65 अंक 22
5. संगीत कला विहार, सितम्बर, 2011 वर्ष - 64, अंक